शुष्क बागवानी समाचार

भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

बीछवाल– बीकानेर– 334006 (राजस्थान)

अंक 15, क्रमांक– 2 जुलाई–दिसम्बर, 2015

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, गोधरा (गुजरात) में डॉ. एन. के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली का भ्रमण

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के बागवानी विज्ञान विभाग के उप महानिदेशक डॉ. एन. के. कृष्ण कुमार ने दिनांक 6 जुलाई, 2015 की संस्थान के उपकेन्द्र केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, गोधरा (गुजरात) का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिक गृह की आधारशिला रखी। इस केन्द्र की स्थापना वर्ष 1979 में तत्कालीन प्रधान मंत्री माननीय मोरारजी देशाई ने भारत के पश्चिमी भाग के गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और राजस्थान राज्यों के आदिवासी किसानों के कल्याण के लिये बारानी बागवानी की तकनीक विकसित करने के लिए की गयी थी। केन्द्र के पास 35 वर्षों बाद भी वैज्ञानिक बैठकों एवं कार्यक्रमों के दौरान बाहर से आने वाले वैज्ञानिकों के ठहरने के लिए कोई सुविधा नहीं थी। माननीय उप महानिदेशक (बागवनी विज्ञान) के अथक प्रयासों से केन्द्र पर वैज्ञानिक गृह के निर्माण के लिए रू 164 लाख की स्वीकृति प्रदान की। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सतीश कुमार शर्मा ने सभी आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया और केन्द्र के विकास एवं उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। इसके बाद माननीय उप महानिदेशक (बागवनी विज्ञान) ने वैज्ञानिकों की एक बैठक बुलाई जिसमें केन्द्र पर भविष्य में किए जाने वाले अनुसंधान कार्यों की रूपरेखा पर चर्चा की गयी। इस अवसर पर डॉ. एस. राजन, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ, डॉ. जितेन्द्र कुमार, निदेशक, भाकृअनुप–औषधीय एवं सुगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, बोरायवी, आनंद, डॉ. पी. आर. भटनागर, अध्यक्ष, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, वसाड, डॉ. बी.जी. बागले, पूर्व अध्यक्ष, केबापके, गोधरा भी उपस्थित थे। माननीय उप महानिदेशक (बागवनी विज्ञान) ने केन्द्र द्वारा विकसित तकनीकियों के प्रदर्शन के लिए खण्ड–1 को विकसित करने का सुझाव दिया। उन्होंने विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में जामुन की गोमा प्रियंका किस्म को बढ़ाने तथा पश्चिमी क्षेत्र के वर्षा आधारित भागों में बेल की गोमा यशि किस्म के औषधीय गुणों व उसके पौधों को वृहद् स्तर पर बढ़ाने पर भी जोर दिया। अपने भ्रमण के दौरान माननीय उप महानिदेशक (बागवनी विज्ञान) ने केन्द्र के विभिन्न अनुसंधान खण्डों के प्रबंधन की सराहना भी की।

अनुसंधान ज्योति

1. बीकानेर

डिगामा हरसेयाना (नॉकटयूडी: लेपिडोपेट्रा) करोंदा के पौधों के लिए नई चुनौती : बीकानेर में करोंदा के पौधों पर पहली बार डिगामा हरसेयाना कीट को देखा गया। इस अध्ययन के दौरान कीट का औसतन प्रकोप 10 से लेकर 60 प्रतिशत और 11.00 से लेकर 63.30 प्रतिशत तक क्रमशः वर्ष 2014 एवं 2015 के दौरान देखा गया। कीटों की संख्या और इनका प्रकोप वर्ष 2014 एवं 2015 के दौरान क्रमशः जुलाई के प्रथम पखवाड़े से सितम्बर के प्रथम पखवाड़े तक सर्वाधिक और अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े में (16.67 एवं 18.33 प्रतिशत) न्यूनतम दर्ज किया गया। इस प्रकार, प्रति पौधा उच्चतम कीट संख्या मध्यमान वर्ष 2014 एवं 2015 के दौरान क्रमशः 5.77 तथा 5.97 प्रति पौधा अगस्त के दूसरे पखवाड़े में तथा इसके बाद के क्रम में 4.8 और 4.83 प्रति पौधा अगस्त के प्रथम पखवाड़े में और अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में यह न्यूनतम दर्ज किया गया।

चित्र: डिगामा हरसेयाना केटरपिलर का प्रकोप

चित्र: डिगामा हरसेयाना कीट के वयस्क नर व मादा